International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का अध्ययन

श्रीमती सरिता शर्मा[1], ममता[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज
[2]बी एड. एम. एड. छात्रा बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज

सारांश

इस शोध का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बी.एड. प्रशिक्षुओं (पुरुष व महिला) में नेतृत्व क्षमता (Leadership Potential) का अध्ययन करना था। यह शोध सर्वेक्षण विधि (Survey Method) पर आधारित था, जिसमें 120 प्रशिक्षुओं का सैंपल लिया गया कृ प्रत्येक क्षेत्र से 60 (30 पुरुष व 30 महिला)। शोध उपकरण के रूप में शोधार्थी द्वारा निर्मित प्रश्नावली (Self & Constructed Leadership Potential Questionnaire) का प्रयोग किया गया। डेटा का विश्लेषण आँकड़ों की प्रतिशत विधि के आधार पर किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण, पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं में नेतृत्व क्षमता के स्तर में कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि नेतृत्व क्षमता प्रशिक्षुओं की व्यक्तिगत समझ, सामाजिक अनुभव और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर आधारित होती है, न कि केवल क्षेत्र या लिंग पर।

कुंजी शब्द :– बी.एड. प्रशिक्षणार्थी, नेतृत्व, क्षमता

पृष्ठभूमि

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है और जीवन में सफलता, सम्मान और पहचान प्राप्त करने के लिए शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है। प्रशिक्षणार्थियों का बहुआगामी विकास विद्यालय–महाविद्यालयों शिक्षा तथा सहगामी गतिविधियों से होता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास से तात्पर्य उसके महत्वपूर्ण विकास से है। इसके अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, शैक्षिक विकास सम्मिलित है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए गुणवता शिक्षा होना आवश्यक है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते है जे समय के साथ–साथ बदलते रहते है। इन्हीं अनुभवों से कुछ सिद्धानत जन्म लेते है, जो मानव व्यवहार को निर्देशित करते है तथा उसके जीवन को गत्यात्मक नेतृत्व प्रभावित करते है। शिक्षा एक सतत् और जीवन्त पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है क्योंकि ज्ञान का भण्डार अनन्त है। बाल केन्द्रित शिक्षण के युग में विद्यार्थियों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले सभी प्रभावों के कारणों से शिक्षक अभिभावकों और शिक्षा शास्त्रियों को परिचित होना आवश्यक है जो बालकों के विभिन्न जीवन उपयोगी कौशलों का विकास होता है। प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का गुण विकसित होता हैं शोधकर्त्री द्वारा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की नेतृत्व क्षमता को जानने तथा पूर्व में हुए शोध कार्यो को अध्ययन अनुभव जानकारी में कार्य कम होने के कारण शोधकर्त्री बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों मे नेतृत्व क्षमता जानने हेतु शोध कार्य सम्पादित किया है।

उद्देश्यः–

1. शहरी क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का अध्ययन।
2. ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का अध्ययन।
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का अध्ययन।
4. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का अध्ययन।

परिकल्पनाएंः–

1. शहरी क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध प्रविधिः–
प्रस्तुत शोध कार्य के लिए आवश्यक सूचनाएं व जानकारी एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्याः–
प्रस्तुत शोध कार्य के लिए जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया है।

न्यादर्श :–
प्रस्तुत शोध कार्य के लिए न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों 360 का चयन किया गया है।

उपकरणः–
प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त उपकरणः–
प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों का संकलन बी.एड. महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थियों द्वारा नेतृत्व क्षमता टेस्ट/परीक्षा लेकर संकलन किया गया है।

प्रस्तुत विश्लेषणः–
प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् सांख्यिकी विधि द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। जिसके अन्तर्गत शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर मध्यमान का प्रयोग किया गया।

परिणामः–
परिकल्पनाओं पर आधारित सारणी निम्नानुसार है–

विभिन्न परिकल्पना	शहरी क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थी	शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष बी. एड. प्रशिक्षणार्थी	शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थी
विद्यार्थियों की संख्या	360	360	360	360
मध्यमान	150 मध्यमान पुरूष 152 मध्यमान महिला	155 मध्यमान पुरूष 149 मध्यमान महिला	150 मध्यमान शहरी पुरूष 155 मध्यमान ग्रामीण पुरूष	152 मध्यमान शहरी महिला 149 मध्यमान ग्रामीण महिला

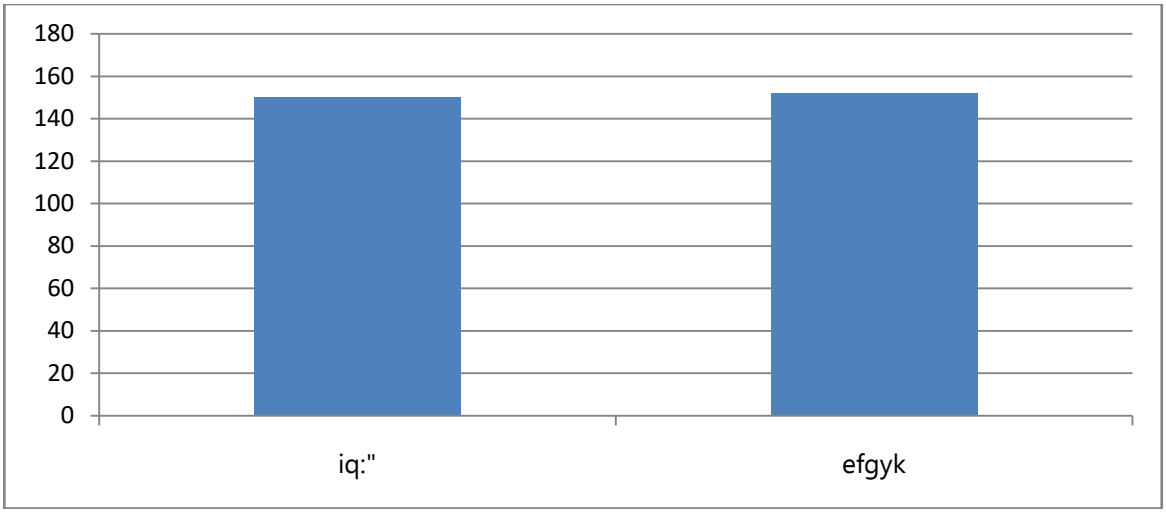

परिणामों की विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता लगभग समान है। उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थी में नेतृत्व क्षमता 150 मध्यमान है और महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थी 152 मध्यमान है और दोनों में नेतृत्व क्षमता का प्रभाव लगभगत समान पड़ता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का लगभगत समान विकास है और प्रशिक्षणार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है और बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता द्वारा पुरूष व महिला के विकास से सम्बन्धित विभिन्न कार्यो को पत्र–पत्रिकाएं/डायरियां, इन्टरनेट, पुस्तकें आदि का उपयोग करते है।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन शोध कार्य के निष्कर्षों से ज्ञात होता है। शोध कार्य बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता का अध्ययन करने का एक लघु शोध है। वर्तमान समय में सभी बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता के प्रति सकारात्मक होने की आवश्यकता है। अध्ययन शोध के द्वारा शहरी क्षेत्र के पुरूष व महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व क्षमता के प्रति अध्ययन के विषय में ज्ञान व रूचि उत्पन्न की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. बेस्ट, जॉन. डब्ल्यू (1982) – रिसर्च इन एजुकेशन, न्यु दिल्ली.
[2]. एडवर्डस, एलेन (1968) – मनोविज्ञान अनुसंधान में मूल्यांकन, न्यु दिल्ली.
[3]. फर्ग्युसन जी.ए. (1966) – मनोविज्ञान में सांख्यिकीय विश्लेषण, न्युयार्क.
[4]. फ्रीमैन, फ्रेंक एस. (1962) – मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की मूल्यांकन, न्यू दिल्ली.
[5]. गुड, सी.बी. एड स्केट्स (1963) – अनुसंधान विधियाँ, न्युयार्क.
[6]. अग्निहोत्री, रवीन्द्र (2007) : आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्या और समाधान, जयपुर राजस्थान ग्रन्थ अकादमी
[7]. अनास्तासी, ए (1957) : साइक्लोजिकल टैस्टिंग, न्यूयार्क, मेकमिलन कम्पनी
[8]. बोगार्ड्स, ए. (1954) : सोशियोलॉजी, न्यूयार्क, मेग्राहिल कम्पनी
[9]. चौधरी, सी.एम. (1997) : अनुसंधान प्रविधियाँ, जयपुर, स्बलाइम पब्लिकेशन्स
[10]. डॉ. भार्गव, महेश (2003) : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा एच.पी. बुक हाऊस

[11]. डॉ. मंगल, अंशु एवं बरौलिया एवं अन्य (2008) : शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ संमक विश्लेषण सांख्यिकी, आगरा, राधा प्रकाशन मंदिर
[12]. डॉ. शर्मा, प्रभा (2006) : शिक्षा मनोविज्ञान, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन